DOI: 10.51220/hjssh.v10i1.8

Himalayan J. Soc Sci.& Humanities (ISSN-0975-9891): 2015, Vol 10, pp 79- 83

पौराणिक साहित्य में वर्णित यमुना

विनोद कुमार उनियाल

राजकीय स्ना0 महाविद्यालय उत्तरकाशी

Received : 02.02.2015 **Accepted: 06.04.2015**

सारांश–पौराणिक संस्कृत साहित्य में पुराण धर्म तथा भक्तिपरक साहित्य से ओतप्रोत है। यह समुद्र की तरह विशाल, लौकिक सृष्टि का आधर तथा समस्त मानवों को सही मार्ग हेतु दिशा प्रदान करने वाले हैं। पुराणों में भक्तिदायिनी यमुना का जिस तरह लोकोत्तर वर्णन किया गया है वह वास्तव में चमत्कारपूर्ण है। पुराणों ने समस्त सृष्टि के संतुलन को व्यवस्थित बनाये रखने के लिए वर्णनीय पवित्रा यमुना जल को प्रमुखतः स्थान प्रदान किया है जो वास्तव में यमुना की महत्ता को परिलक्षित करता है। प्रस्तुत शोधपत्र में इन्हीं शब्दों को विस्तार पूर्वक वर्णित किया गया है।

कुँजी शब्द–पुराण, यमुना, सलिल, पयोध्र, तीर्थ, गोलोक, कालिन्दी, कलिन्द गिरि, यम–यमी, यामुनोत्तर, मार्तण्ड, यमुनाप्रभव आदि।

पौराणिक साहित्य समुद्र की तरह विशाल है। जो भारतीय संस्कृति तथा संस्कृत का विराट कोश है। इसका आधर मूलतः वेद है। वेदों में जिन विषयों को सूत्रात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है पुराणों में उन्हीं तत्वों को रूपकों के माध्यम से व्यक्त किया गया है। वैदिककाल में विचारों की दो धराएं दृष्टिगोचर होती हैं–1. वैदिक धरा 2. पौराणिक धरा। वैदिक धारा के आरम्भ से ही धार्मिकता का विशिष्ट महत्त्व है। अर्थात् यज्ञ को विशिष्ट स्थान प्राप्त है। पौराणिक धारा का उद्देश्य लोकवृत्त का अनुशीलन तथा समीक्षण कर प्रत्येक विषयवस्तु का सांगोपांग वर्णनात्मक शैली से विश्लेषण करना है।[1] पौराणिक साहित्य जितना विस्तृत है उतना ही जटिल भी है। इन दोनो धाराओं की सत्ता पुराण के प्रामाण्य से सिद्ध हो जाती है। मार्कण्डेय पुराण में निम्न तथ्य को स्पष्ट किया गया है–**उत्पन्नमात्रास्य पुरा ब्रह्मणोभिव्यक्तजन्मनः। पुराणमेतद् वेदाश्च मुखेभ्योभिनुविनिःसृता।।**[2] अर्थात् अव्यक्त ब्रह्मा ने सृष्टि के प्रारम्भ में पुराण तथा वेद को मुख से निर्गत किया है। मार्कण्डेय पुराण के मतानुसार पुराण की सृष्टि प्राक्कालीन तथा वेद की सृष्टि उत्तरकालीन है। इस प्रकार षियों तथा मुनियों ने वेदों तथा पुराणों को ग्रहण कर उसके विपुलीकरण और प्रचार प्रसार में प्रवृत्त हुए। श्रीकृष्णद्वैपायन वेदव्यास ने ही पुराण जैसे महान ग्रन्थों की रचना की है।

पौराणिक साहित्य में उल्लिखित पुराण भारतीय लोकसाहित्य के आधर स्तम्भ हैं यही आधर स्तम्भ मनुष्यमात्रा को उसके जीवन चक्र व परिस्थितियों से अवगत करवाकर जीवन जीने के माध्यम को सुबोध व सरस बनाते हैं। पुराण व्यक्ति के जीवन के महत्त्वपूर्ण घटकों में से एक हैं जिनका पौराणिक साहित्य में धर्मिक दृष्टि से विशेष महत्त्व है, क्योंकि पुराणों का महत्त्व आज से नहीं बल्कि अनादिकाल से दृष्टिगोचर हो रहा है।

© SHARAD

उन्हीं पुराणों के अन्तर्गत यमुना निरन्तर प्रवाहमान बनी हुई है जो अनादिकाल से मनुष्यमात्रा को अपने पवित्रा जल के द्वारा अभिसिक्त करते हुए निरन्तर पृथ्वीलोक पर प्रवाहित हो रही हैं। माँ यमुना कलियुग के सभी प्राणियों के कलुषित पापों को नष्ट करते हुए निरन्तरं प्रकाशित व प्रवाहित हो रही है। उनकी महत्ता कहीं पवित्र जल के रूप में तो कहीं भक्तिप्रदायिनी के रूप में यत्रा–तत्रा विद्यमान है। जिससे यमुना के जल की महिमा अत्यधिक बढ़ जाती है।

पौराणिक नदी यमुना के जल का महत्त्व–पौराणिक नदी यमुना की जलधरा कोई साधरण जलधरा नहीं बल्कि वह पवित्रा धरा है जो तीनों लोकों को आज भी पवित्र कर रही है। बिना जल के मनुष्य का जीवन अधूरा है क्योंकि यमुना का जल जीवन के लिए एक वरदान है व जीवन का एक पर्याय है जिसे हर मनुष्य एक नहीं बल्कि हजारों जन्मों तक पान करना चाहता है। पौराणिक साहित्य इसी बात का समर्थन करता है कि यमुना कोई साधारण नहीं वह तो 'गोलोक'[3] से निकली पवित्र पूजनीय व वन्दनीय है जिसका महत्त्व निरन्तर बना हुआ है। गंगा आदि नदियों की भांति यमुना का महत्त्व भी कुछ कम नहीं है हरिवंशपुराण में वर्णित है कि **'सुतीर्था स्वादुसलिला "ादिनी वेगगामिनीम्।**[4] अर्थात् यमुना का जल सुन्दर तथा स्वादिष्ट है उसका वेग अत्यन्त तीव्र था जो कलुषित पापों का तीव्र नाशक है। यमुना के जल की तुलना दूध जैसे निर्मल पदार्थ से भी की गयी है केदारखण्ड में वर्णन आया है कि–**'निपानश्वापदापीड़ां नृभिः पीनपयोध्राम्।**[5] इस प्रकार मनुष्यों के द्वारा दूध जैसे निर्मल यमुना को पीना उसके महत्त्व को प्रतिपादित करता है।

माँ यमुना गोलोक ;विष्णुलोकद्ध से निकलकर पृथिवीलोक वासियों को स्वच्छ जल प्रदान कर रही हैं परन्तु विडम्बना यह है कि कलियुग में मनुष्य अपने निजी स्वार्थ के लिए उसके जल को दूषित कर रहे हैं। जिस प्रकार द्वापरयुग में यमुना कालिया नाग के जहरीले विष से दूषित हो गयी थी उसी प्रकार वर्तमान में भी मनुष्य कालिय बनकर यमुना में ढेरों गंदगी डालकर उसके जल को मैला कर रहा है परन्तु वह यह नहीं जानता कि तब भगवान श्रीकृष्ण ही कालिया जैसे नाग को वहाँ से भगाने में समर्थ हुए थे। ठीक उसी प्रकार आज भी सभी को श्रीकृष्ण के पगचिन्ह पर चलने की महती आवश्यकता है तभी उसका जल सभी के लिए कल्याणकारी हो सकता है नहीं तो वह दिन दूर नहीं जब यमुना अपने विशाल वेग से सृष्टि में प्रलय मचा देगी। यमुना का जल अत्यन्त ही वेगवान है वह श्रीकृष्ण की प्रेयसी भी है। श्रीमद्भागवत् पुराण के दशम स्कन्ध में श्रीकृष्ण को वसुदेव द्वारा यमुनापार कराने का मनोहर वर्णन द्रष्टव्य है–

मघोनि वर्षत्यसकृद्यमानुजा गम्भीरतोयौघजवोर्मिफेमिला।
भयानकावर्तशताकुला नदी मार्गं ददौ सिन्धुरिव श्रियः पते।।[6]

यह वृत्तान्त कृष्ण जन्म का है जिस समय वसुदेव श्रीकृष्ण को यमुनापार कराते हैं माँ यमुना के जल में निरन्तर वृद्धि होते रहने से यमुना जी का प्रवाह अति गम्भीर ओर तीव्र हो जाता है, समुद्र ने जैसे त्रेता में श्रीरामचन्द्र जी को मार्ग दे दिया था वैसे ही यमना जी ने भी वसुदेव जी को पार कराने के लिए राह दे दी थी। इस पद्य से यमुना का महत्त्व अत्यधिक बढ़ जाता है क्योंकि यमुना सांवरे कृष्ण के चरणों का स्पर्श करना चाहती थी। उनके प्रबल वेग का कारण कृष्ण दर्शन की लालसा थी, जिससे सुस्पष्ट होता है कि यमुना कृष्ण मिलन के लिए कितनी उत्सुक थीं। कृष्ण के चरणों का स्पर्श कर लने के पश्चात् यमुना का वेग तथा उसकी चंचलता कम हो जाती है व वसुदेव जी यमनापार हो जाते हैं। यही माँ यमुना के शीतल व श्यामल जल की विशेषता है। पुराणों में वर्णित यह प्रसंग उनके महत्त्व को प्रतिपादित करता है और दर्शाता है कि वह कितनी

महान हैं। पुराणों में वर्णित यमुनापरक अनेक प्रसंग जीवनोपयोगी हैं तथा पौराणिक साहित्य की वृद्धि में भी सहायक है। ब्रह्मपुराण में यमुना के आध्यात्मिक स्वरूप का स्पष्टीकरण करते हुए उसकी महत्ता का वर्णन किया गया है–

यवीयसी तु साप्यासीद्यामी कन्या यशस्विनी। अभवच्च सरिच्छेष्ठा यमुना लोकपावनी।।[7] ब्रह्मपुराण के आधार पर वह प्रशस्त यश वाली यम की छोटी बहन नदियों में श्रेष्ठ और लोगों को पवित्र करने वाली यमुना नाम से ख्यात हुई। माँ यमुना की प्रसिद्धि उसके वैभव, पवित्रता तथा निर्मलता का विशिष्ट प्रमाण है। इसीलिए मनुष्य निरन्तर यमुना के उस श्यामल स्वरूप का नित्य दर्शन व पूजन करता है। गौड़ीय विद्वान रूपगोस्वामी ने यमुना को साक्षात् परमतत्त्व कहा है उनका कथन है कि–**'जो सृष्टि का आधर है और जिसे लक्षणों से सच्चिदानन्द कहा जाता है, उपनिषदों ने जिसका गायन किया है वही परमतत्त्व साक्षात् यमुना है।'** इस प्रकार इन्होंने यमुना को साक्षात् चिदानंदमयी बतलाया है। कूर्मपुराण में यमुना के पावन चरित का अनिशय वर्णन निम्न प्रकार से किया गया है–

तपनस्य सुता देवी त्रिषु लोकेषु विश्रुता। समागता महाभागा यमुना तत्रा निम्नगा।।
येनैव निःसुता गंगा तनैव यमुना गता। योजनानां सहड्डेषु कीर्तनात् पापनाशिनी।।
.....तत्रा स्नात्वा च पीत्वा च यमुनायां यधिष्ठि।।
सर्वपापविनिर्मुक्तः पुनात्यासप्तमं कुलम्। प्राणांस्त्यजति यस्तत्रा स याति परमां गतिम्।।[8]

मार्कण्डेय जी युधिष्ठि से कह रहे हैं कि हे युधिष्ठिर ! महाभाग्यशाली यमुना सूर्यपुत्री है वह तीनों लोकों में प्रसिद्ध है। जिस मार्ग से गंगा गयी है उसी मार्ग से यमुना गई है। सहस्त्रो योजन दूर पर भी कीर्तन करने से यमुना पापों को नष्ट कर देती है। हे युधिष्ठिर ! यमुना में स्नान करने एवं वहाँ का जल पीने से मनुष्य सभी पापों से मुक्त हो जाता है एवं अपने कुल की सात पीढ़ियों को पवित्र कर देता है। जो उसके पावन तट पर प्राणों का त्याग करता है उसे परम गति प्राप्त होती है।

स्कन्धपुराणान्तर्गत केदारखण्ड में वर्णित यमुना का उद्गम स्थल हिमालय की गोद से माना गया है क्योंकि यमुना गोलोक से निकलकर इसी हिमालय के प्रसिद्ध भाग कलिंद पर्वत से निःसरित हुई है इसीलिए यमुना कलिंद पर्वत से निकलने के कारण कालिन्दी स्वरूपा नाम से कीर्तन करी गई हैं। पुराणों में यत्र–तत्र इस नाम का यशोगान मिलता है। श्रीगर्गाचार्य प्रणीत गर्गसंहिता में भी यमुना को कलिन्दशिखर पर जा गिरने से कालिन्दी नाम सार्थक बताया गया है–**'कृष्णा तु प्रययौ शैलं कालिन्दं प्राप्य सा यदा। कालिन्दीति समाख्याता कालिन्द प्रभवा यदा।**[9] इस प्रकार यमुना का कालिन्दी नाम सार्थक प्रतीत होता है। यमुना को श्रीकृष्ण की वामाघ्रिगनी भी कहा जाता है। गर्गसंहिता के एक प्रसंग में गंगा यमुना से कहती हैं कि–हे कृष्णे ! सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को पावन बनाने वाली, तुम धन्य हो। श्रीकृष्ण के वामाघ्ग से तुम्हारा प्रादुर्भाव हुआ है–**'कृष्णवामाघ्ग संभूता परमानन्दरूपिणी।**[10] आगे कहती है कि परिपूर्णतम परमात्मा श्रीकृष्ण की भी तुम पट्टरानी हो–'पट्टरानी परां कृष्णे' अतः हे कृष्णे तुम सब प्रकार से उत्कृष्ट हो। तुम कृष्णा को मैं प्रणाम करती हूँ। इस प्रकार वैमातृक भगिनी गंगा द्वारा यमुना की प्रशंसा की गई है जो उत्तम है। शिवपुराण में भी यमुना को लोकपावनी कहा गया है एक पद्य द्रष्टव्य है–**यवीयसी तयोर्या तु यमी कन्या यशस्विनी।।**[11] **अभवत्सा सरिच्छ्रष यमुना लोकपावनी।।**[12] शिवपुराण में वर्णन आया है कि सूर्य की छोटी यशस्विनी यमी नामक जो कन्या थी, वह लोकों को पवित्रा करने वाली यमुना नाम से ख्यात हुई। इस प्रकार पौराणिक साहित्य के

अन्तर्सन्निविष्ट समस्त पुराण वास्तव में यमुना को पौराणिक नदी प्रमाणित करते हैं जो कि सत्य है। इसके चरित के श्रवणमात्र से ही मनुष्य यमत्रास से मुक्त होकर सदा अपने लिए मोक्ष का मार्ग प्रशस्त करता है।

उत्तराखण्ड में अवस्थित यामुनोत्तर ;वर्तमान यमुनोत्तरीद्ध तीर्थ

तीर्थनगरी उत्तराखण्ड में अवस्थित यामुनोत्तर; वर्तमान यमुनोत्तरीद्ध तीर्थ विश्वप्रसिद्ध है। यह हिमचट्टानों की तलहटी के बीच निरन्तर शोभायमान हो रहा है। कलिन्दपर्वत के शिरोभाग से गिरती हुई यमुना की श्यामल जलधरा इस भव्य स्थान पर पहुँचकर देश विदेश से आये हुए विभिन्न श्रद्धालुओं के निरन्तर आकर्षण का केन्द्र बनी हुई है। स्कन्धपुराणान्तर्गत केदारखण्ड में वर्णन द्रष्टव्य है यथा–

गंगोत्तरं समाख्यातं दक्षिणे मुनिसेवितम्। तद्वामे या[सिता देवी यमुना सा
प्रकीर्तिता।।[13]यामुनोत्तरमाख्यातं सर्वसिद्धि प्रदायकम्। इति तीर्थद्वयं यस्तु प्रातःकाले च
संस्मरेत्।।[14]दुःखानि तस्य नश्यंति यथा राज्ञो महेश्वरि। नीत्वा तां तु शुभां धरां गंगाख्यां
पापनाशिनी।।[15]

दक्षिण की ओर मुनियों से सेवित वोह 'गंगोत्तर' नाम तीर्थ है, और उसके वामभाग में जो कृष्णवर्ण देवी है वोह यमुना नाम से कीर्तन करी गई है। समस्त सिद्धियों को देने वाले इस तीर्थ को यामुनोत्तर कहते हैं। जो व्यक्ति प्रभातसमय इन दोनों तीर्थों का स्मरण करता है राजा भगीरथ ही के समान उसके भी पाप विनष्ट हो जाते हैं।

इस प्रकार स्कन्धपुराण में उल्लिखित यामुनोत्तर तथा गंगोत्तर तीर्थ को वर्तमान में यमुनोत्तरी तथा गंगोत्तरी तीर्थ के नाम से जाना जाता है जो विश्वप्रसिद्ध हैं। वहीं कालिन्दी पर्वत से सटा हुआ प्राचीनकालिन यमुना का भव्य मन्दिर भी है। इसी के पूर्व भाग में सूर्यकुण्ड अपनी उष्णता के लिए विश्वविख्यात हैं यह निरन्तर 100^0 से भी ऊपर खौलता रहता है यात्रीगण पोटली में चावल बांधकर एक रस्सी के सहारे इसमें डालते हैं जो थोड़ी देर में पककर ऊपर आ जाती है इसी चावल से यमुना को भोग लगता है तत्पश्चात रास्ता यात्रीगण इसी चावल से लगे हुए भोग को ग्रहण करते हैं। इसी कुण्ड से सटी हुई यमुना दिव्यशिला है जहाँ पर एक गेह बनी हुई है, इसी को यमुना मुख के नाम से भी अभिहित किया गया है। इससे निरन्तर भौं–भौं की ध्वनि के साथ दो गर्मधराएँ निकलती हैं जिसका स्पर्श कर प्रत्येक श्रद्धालु अपने को धन्य समझता है। साथ ही इसी दिव्यशिला से निर्मित स्थान पर यमुना के शीतकालीन आवास स्थल खरसाली, के पुरोहितगण (रावल) पूजा अर्चना करते हैं व देश विदेश से आये हुए सभी श्रद्धालुओं का अपने बहीखाता के माध्यम से वंशावली भी देखते हैं बहीखाता में अपने पूर्व में आये हुए पिता, दादा, परदादा आदि का नाम मिल जाने के उपरान्त यह सुनिश्चित हो जाता है कि उक्त यात्रीगण का पुरोहित कौन है। अर्थात् जहाँ जिस बहीखाते में नाम मिले उसी बहीखाता से सम्बन्धित पुरोहित मान लिया जाता है इस परम्परा की शुरुआत सर्वप्रथम मारवाड +(राजस्थानद्ध से हुई यहाँ के पुरखों की इस परम्परा को आज भी जीवित रखा गया है जो कि हरिद्वार, प्रयाग, गंगोत्तरी, यमुनोत्तरी आदि समस्त तीर्थों में प्रचलित है। यहाँ के उनियाल तीर्थ पुरोहित ही पूजा अभिषेक करवाते हैं। ब्रह्माण्डपुराण उन्हीं पुराणों में से एक है जो यमुना के उत्पत्ति स्थल यमुनोत्तरी में था(कर्म करने का विशेष पफल बतलाता है जो निम्न प्रकार से है–

यमुनाप्रभवे चैव सर्वपापैः प्रमुच्यते। अत्युष्णाश्चातिशीताश्च आपस्तस्मिन्नदर्शनम्।।
यमस्य भगिनी पुण्या मार्तंडदुहिता शुभा। तत्राक्षयं सदा श्रा(पितृभिः पूर्वकीर्तितम्।।[16]

अर्थात् यमुना की उत्पत्ति स्थल ;यमुनोत्तरीद्ध पर था (करने वाला मनुष्य सब पापों से मुक्त हो जाता है। वहाँ का अत्यधिक उष्ण (गर्म) जल तथा अत्यधिक शीतल जल ही इसका प्रमाण है। यह परम पवित्रा यमुना यम की भगिनी और मार्तंड की पुत्री हैं। उसमें किया गया था (अक्षयफलदायी होता है। ऐसा पूर्वकालीन पितरों ने कहा है। अतः पौराणिक अनुश्रुतियों के अनुसार यमुना की महत्ता व उसकी प्रशस्ति का गान उल्लेखनीय है जिसे नकारा नही जा सकता है जो पुराणों की महत्ता को भी अत्यधिक बढ़ाता है। यमुना निरन्तर निर्मल तथा स्वच्छ बनी रहे और इसके साथ–साथ वह वृद्धि करती हुई अपनी कल–कल की ध्वनि से विश्व जनमानस की श्रुतियों को आनन्दित तथा आलोकित करती रहे इसी आशा को मन में धरण करते हुए अन्ततोगत्वा प्रस्तुत पद्य के माध्यम से मेरा उससे एक ही विनम्र निवेदन है कि–**यस्य भाग्यवशान्मृत्युर्यमुनायास्तटे भवेत्। स लभेद्ब्रह्मसायुज्यु न स भूयोभिजायते।।**[17]

सन्दर्भ सूची–

1. आचार्य बलदेव उपाध्याय : पुराण विमर्श, पृ.सं. 40.
2. मार्कण्डेय पुराण अध्याय : 45/20, श्रीकन्हैयालाल मिश्र, चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी, संस्करण 2009.
3. गर्गाचार्य विरचित गर्गसंहिता वृन्दावन खण्ड : अध्याय 3, पृ.सं 94–96,
4. हरिवंशपुराण द्वितीय पर्व अध्याय : 12/30,
5. केदारखण्ड पुराण अध्याय : 12/39,
6. श्रीमद्भागवत्पुराण :अध्याय–3/51, श्रीगंगासहाय पाण्डेय, चौखम्बा प्रतिष्ठान दिल्ली, बैक्रमाब्दे 2008, 2020, प्रथम तथा द्वितीय संस्करण।
7. ब्रह्मपुराण : 6/51.52, श्री तारिणीश झा, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, पुनर्मुद्रित 1976.
8. कूर्मपुराण पूर्वभाग : 37/1–03, सर्वभारतीय काशिराजन्यास दुर्ग रामनगर वाराणसी, –वि.सं. 2029,
9. श्रीगर्गाचार्य विरचित गर्गसंहिता वृन्दावन खण्ड : अध्याय–3/12, पृ.सं. 94.
10. तदैव : अध्याय–3/25, पृ.सं. 95.
11. शिवपुराण अध्याय : 35/41.
12. तदैव अध्याय : 35/42.
13. स्कन्धपुराणान्तर्गत् केदारखण्ड पुराण, अध्याय : 39/44. प्रकाशक–श्री महेश्वर प्रसाद श्रीवास्तव, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, जवाहरनगर, बंगलोरोड़, दिल्ली. पुनर्मुद्रित संस्करण : 2007.
14. तदैव : अध्याय : 39/45.
15. तदैव : अध्याय : 39/46.
16. ब्रह्माण्डमहापुराण अध्याय : 13/71.72, पृ.सं 476, सम्पादक : प्रो. दलवीर सिंह चौहान, चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी, प्रथम संस्करण : 2070, सन् 2014, पूर्वा(म्।
17- स्कन्धपुराणान्तर्गत् केदारखण्ड पुराण, अध्याय : 131/08, पृ.सं 755,